

## हिन्दी साहित्य में भारतेंदु हरिश्चंद्र का योगदान

विवेक आत्रेय

प्रस्तावना

एम.ए. (हिन्दी),  
 कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र

भारतेंदु हरिश्चंद्र का परिचय :-

भारतेंदु हरिश्चंद्र ( 1850 1885) को हिंदी साहित्य के आधुनिक युग का जनक माना जाता है। उनका जन्म वाराणसी में एक प्रतिष्ठित परिवार में हुआ था। वे एक कवि, नाटककार, और संपादक थे, जिन्होंने हिंदी साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान दिया। भारतेंदु ने खड़ी बोली को साहित्यिक भाषा के रूप में स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके साहित्यिक कार्यों में सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों का प्रमुखता से चित्रण होता है, जो उस समय के समाज की वास्तविकताओं को उजागर करता है (कुमार, 2014)।

Paper Rceived date

05/05/2025

Paper date Publishing Date

10/05/2025

DOI

<https://doi.org/10.5281/zenodo.15595698>

भारतेंदु का लेखन समाज सुधार की भावना से प्रेरित था। उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज में व्याप्त कुरीतियों और अंधविश्वासों के खिलाफ आवाज उठाई। उनकी रचनाएँ समाज को जागरूक करने और उसमें सुधार लाने के उद्देश्य से लिखी गई थीं (शर्मा, 2016 )। भारतेंदु ने अपने समय के समाज के विभिन्न पहलुओं को गहराई से समझा और उन्हें अपने साहित्य में प्रस्तुत किया।

**IMPACT FACTOR**

**5.924**

भारतीय साहित्य में भारतेंद्र का स्थान :-

भारतीय साहित्य में भारतेंदु हरिश्चंद्र का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्हें हिंदी साहित्य के नवजागरण का अग्रदूत माना जाता है। भारतेंदु ने अपने समय के समाज में व्याप्त कुरीतियों, अंधविश्वासों, और अन्य सामाजिक समस्याओं को अपने लेखन के माध्यम से उजागर किया और समाज को सुधार की दिशा में प्रेरित किया (मिश्रा,

2015 ) । उन्होंने न केवल साहित्यिक रचनाएँ लिखीं, बल्कि हिंदी पत्रकारिता के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया।

भारतेंदु की रचनाओं में सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों का प्रमुखता से चित्रण होता है। उन्होंने अपने नाटकों, कविताओं, और लेखों के माध्यम से समाज को जागरूक करने का प्रयास किया। उनकी रचनाएँ आज भी प्रासंगिक हैं और हिंदी साहित्य के विद्यार्थियों और शोधकर्ताओं के लिए प्रेरणास्रोत हैं (गुप्ता, 2017 ) । उनके साहित्यिक कार्यों में सामाजिक सुधार की भावना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

भारतेंदु की साहित्यिक धारा :-

#### 1. भाषा और शैली

##### खड़ी बोली का प्रयोग

भारतेंदु हरिश्चंद्र ने हिंदी साहित्य में खड़ी बोली का प्रयोग शुरू किया और इसे एक साहित्यिक भाषा के रूप में स्थापित किया। उनके पहले की रचनाओं में ब्रजभाषा का प्रचलन था, लेकिन भारतेंदु ने खड़ी बोली को अपनी रचनाओं में प्रमुखता दी। उन्होंने खड़ी बोली को साहित्यिक अभिव्यक्ति का माध्यम बनाकर इसे एक नई पहचान दी। उनकी रचनाओं में खड़ी बोली का सहज और स्वाभाविक प्रयोग देखने को मिलता है ( कुमार, 2014)।

##### सरल और प्रभावी भाषा शैली

भारतेंदु हरिश्चंद्र की भाषा शैली सरल, सहज और प्रभावी थी। उन्होंने अपनी रचनाओं में ऐसी भाषा का प्रयोग किया जो आम जनमानस को समझ में आ सके। उनकी भाषा शैली में स्पष्टता और सादगी थी, जिससे पाठकों को उनके विचारों और संदेशों को समझने में आसानी होती थी। उनकी रचनाओं में व्याकरण की शुद्धता और शब्दों का सटीक चयन देखने को मिलता है (शर्मा, 2016)।

#### 2. विषयवस्तु :-

##### सामाजिक और राजनीतिक मुद्दे

भारतेंदु हरिश्चंद्र ने अपने साहित्य में सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों को प्रमुखता से उठाया। उन्होंने समाज में व्याप्त कुरीतियों, अंधविश्वासों और अन्य सामाजिक समस्याओं पर अपने लेखन के माध्यम से चोट की। उनके नाटकों और कविताओं में समाज सुधार की भावना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। उन्होंने समाज में परिवर्तन लाने के उद्देश्य से अपने साहित्य का उपयोग किया (मिश्रा, 2015)। संस्कृति और परंपराओं का चित्रण

भारतेंदु हरिश्चंद्र की रचनाओं में भारतीय संस्कृति और परंपराओं का सुंदर चित्रण देखने को मिलता है। उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से भारतीय समाज की सांस्कृतिक धरोहर को संजोने और उसे उजागर करने का प्रयास

किया। उनके नाटकों और कविताओं में भारतीय त्योहारों, रीति-रिवाजों और परंपराओं का वर्णन मिलता है। जो उनकी सांस्कृतिक समझ और उसके प्रति प्रेम को दर्शाता है (गुप्ता, 2017) 1

### 3. साहित्यिक विधाएँ:-

#### नाटक

भारतेंदु हरिश्चंद्र ने हिंदी नाटक को एक नई दिशा दी। उन्होंने अपने नाटकों में सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों को प्रमुखता से उठाया। उनके नाटकों में भारतीय समाज की वास्तविकताओं का चित्रण मिलता है। उनके नाटक न केवल मनोरंजन के लिए थे, बल्कि समाज में जागरूकता लाने का माध्यम भी थे (जैन, 2013) 1

#### कविता

भारतेंदु हरिश्चंद्र ने अपनी कविताओं में समाज सुधार की भावना को प्रमुखता से उठाया। उनकी कविताएँ सरल और प्रभावी भाषा में लिखी गई थीं, जो पाठकों के दिलों में सीधे उतर जाती थीं।

### 4. साहित्यिक योगदान

#### नाट्य साहित्य में योगदान

#### प्रमुख नाटकों का वर्णन

भारतेंदु हरिश्चंद्र ने कई प्रमुख नाटक लिखे, जिनमें "अंधेर नगरी," "भारत दुर्दशा," और "सत्य हरिश्चंद्र" शामिल हैं। इन नाटकों में उन्होंने समाज की वास्तविकताओं को उजागर किया और समाज सुधार की भावना को प्रमुखता से उठाया। "अंधेर नगरी" में उन्होंने भ्रष्टाचार और अन्याय के खिलाफ आवाज उठाई, जबकि "भारत दुर्दशा" में उन्होंने भारतीय समाज की दशा का चित्रण किया (गुप्ता, 2017)|

#### नाटकों की समाज पर प्रभाव:-

भारतेंदु हरिश्चंद्र के नाटकों का समाज पर गहरा प्रभाव पड़ा। उनके नाटकों ने समाज को जागरूक किया और समाज सुधार की दिशा में प्रेरित किया। उनके नाटकों में समाज की वास्तविकताओं का चित्रण था, जिसने दर्शकों को सोचने पर मजबूर किया। उनके नाटकों ने समाज में परिवर्तन लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई (शर्मा, 2016)|

#### काव्य साहित्य में योगदान

#### प्रमुख कविताओं का वर्णन :-

भारतेंदु हरिश्चंद्र की प्रमुख कविताओं में "वैदिक हिंसा हिंसा न भवति." "भारत वीणा," और "विधवा विलाप शामिल हैं। इन कविताओं में उन्होंने समाज के विभिन्न पहलुओं का वर्णन किया और समाज सुधार की भावना को प्रमुखता से उठाया। उनकी कविताओं में सरलता और प्रभावशीलता थी। जो पाठकों के दिलों में सीधे उतर जाती थी (मिश्रा, 2015) 1

कविताओं की विषयवस्तु और शैली :-

भारतेंदु हरिश्चंद्र की कविताओं की विषयवस्तु सामाजिक मुद्दों, संस्कृति और परंपराओं पर केंद्रित थी। उनकी कविताओं की शैली सरल और सहज थी, जिससे पाठकों को उनके विचारों और संदेशों को समझने में आसानी होती थी। उनकी कविताओं में समाज सुधार की भावना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है (कुमार, 2014)।

गद्य साहित्य में योगदान

प्रमुख गद्य रचनाएँ:-

भारतेंदु हरिश्चंद्र की प्रमुख गद्य रचनाओं में "एक लघुकथा, "समाचार सुधा वर्षण. " और "हरिश्चंद्र चंद्रिका शामिल हैं। इन गद्य रचनाओं में उन्होंने समाज की वास्तविकताओं का विस्तृत वर्णन किया और समाज सुधार की भावना को प्रमुखता से उठाया। उनकी गद्य रचनाएँ भी उनकी कविताओं और नाटकों की तरह समाज सुधार की भावना से प्रेरित थीं (जैन, 2013)।

गद्य साहित्य की विशेषताएँ :-

भारतेंदु हरिश्चंद्र के गद्य साहित्य की विशेषताएँ उनकी सरल और सहज भाषा शैली, स्पष्टता, और प्रभावशीलता थीं। उनकी गद्य रचनाओं में समाज के विभिन्न पहलुओं का विस्तृत वर्णन मिलता है। उनकी गद्य रचनाएँ समाज सुधार की दिशा में प्रेरित करने वाली थीं और समाज को जागरूक करने का प्रयास करती थीं ( तिवारी, 2012 ) ।

5. भारतेंद्र की साहित्यिक धारा का प्रभाव

समकालीन साहित्य पर प्रभाव:-

भारतेंदु हरिश्चंद्र की साहित्यिक धारा ने समकालीन साहित्य पर गहरा प्रभाव डाला। उनके द्वारा स्थापित खड़ी बोली और सरल भाषा शैली ने अन्य साहित्यकारों को भी प्रभावित किया। उन्होंने साहित्य को आम जनमानस की भाषा में लाने का काम किया, जिससे हिंदी साहित्य अधिक सजीव और प्रभावी बन गया। उनके साहित्यिक कार्यों ने समाज सुधारकों और लेखकों को प्रेरित किया और सामाजिक मुद्दों को उठाने के लिए एक मंच प्रदान किया (शर्मा, 2015 ) ।

भविष्य की पीढ़ियों पर प्रभाव :-

भारतेंदु हरिश्चंद्र की साहित्यिक धारा ने भविष्य की पीढ़ियों पर भी महत्वपूर्ण प्रभाव डाला। उनकी रचनाओं ने न केवल उनके समकालीन साहित्यकारों को प्रभावित किया, बल्कि आने वाली पीढ़ियों को भी साहित्य के प्रति जागरूक और प्रेरित किया। उन्होंने साहित्य को एक सामाजिक परिवर्तन का माध्यम बनाया, जिससे आने वाली पीढ़ियों ने समाज सुधार की दिशा में साहित्य का उपयोग किया (गुप्ता, 2016 ) ।

हिंदी साहित्य में भारतेंदु युग की महत्ता :-



## International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

भारतेंदु हरिश्चंद्र का युग हिंदी साहित्य में भारतेंदु युग के नाम से जाना जाता है। इस युग में हिंदी साहित्य ने एक नई दिशा और गति प्राप्त की। भारतेंदु युग में साहित्यिक विधाओं में विविधता और गहराई आई। इस युग की महत्ता इसलिए भी है क्योंकि इसने हिंदी साहित्य को एक नई पहचान दी और इसे एक सशक्त माध्यम के रूप में स्थापित किया।

**निष्कर्ष:-**

भारतेंदु हरिश्चंद्र ने हिंदी साहित्य को एक नई दिशा और पहचान दी। उनकी साहित्यिक धारा ने न केवल उनके समकालीन साहित्यकारों को प्रभावित किया, बल्कि भविष्य की पीढ़ियों को भी प्रेरित किया। उनकी रचनाओं में खड़ी बोली का प्रयोग, सरल और प्रभावी भाषा शैली, और सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों का चित्रण देखने को मिलता है। उन्होंने साहित्य को एक सामाजिक परिवर्तन का माध्यम बनाया और समाज सुधार की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया। भारतेंदु युग हिंदी साहित्य में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है और उनकी साहित्यिक धारा की महत्ता सदैव बनी रहेगी।

**संदर्भ सूची**

1. कुमार, अ. (2014). भारतेंदु हरिश्चंद्र आधुनिक हिंदी साहित्य के जनक. वाराणसी हिंदी साहित्य प्रकाशन
2. शर्मा, एस. (2016). भारतेंदु और समाज सुधार, दिल्ली: राष्ट्रीय साहित्य संस्थान
3. मिश्रा, आर. (2015) हिंदी साहित्य में नवजागरण. मुंबई साहित्य अकादमी.
4. गुप्ता. पी. केंद्र. (2017). समाज और साहित्य. भारतेंदु का योगदान. कोलकाता. साहित्यिक अध्ययन
5. जैन, एम. (2013). भारतेंदु हरिश्चंद्र के नाटक. लखनऊ: साहित्य भवन 5
6. तिवारी, के. (2012). भारतेंदु का साहित्यिक विश्लेषण, पटना साहित्य विकास प्रकाशन.